प्रातः क्लास   ओमशान्ति   28-8-67

रिकार्डः-कौन आयाः- ओमशान्ति। बच्चे समझते हैं हम आत्मा हैं न कि शरीर। और यह ज्ञान अभी ही मिलता है परम पिता परमात्मा से। बाप कहते हैं जब कि मैं आया हूँ तो तुम अपन को आत्मा निश्चय करो। आत्मा ही शरीर में प्रवेश करती है। एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्मा नहीं बोलती शरीर बोलता है। आत्मा अविनाशी है। तो अब अपन को आत्मा समझना है। यह ज्ञान कब कोई दे न सके। बाप ही आये हैं, बच्चों की पुकार पर। यह भी किसको पता नहीं है कि यह पुरुषोत्तम संगम युग है। बाप आकर समझाते हैं और आना होता है कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर। जब कि सारी विश्व पुरुषोत्तम बनती है। इस समय तो सारी विश्व पतित कनिष्ठ है। उनको कहा जाता है अमरपुरी। यह है मृत्यु लोक। मृत्यु लोक में आसुरी गुण वाले मनुष्य रहते हैं। अमर लोक में दैवी गुण वाले मनुष्य हैं इस लिए उन्हों को देवता कहा जाता है। यहाँ भी अच्छे स्वभाव वाले को कहा जाता है। यह तो जैसे कि देवता है। कोई को दैवी गुण कोई को आसुरी गुण होते हैं। इस समय सब हैं आसुरी गुण वाले। 5 विकारों में फँसे हुये हैं। तब गाते हैं इस दुःख से आकर लिबरेट करो। कोई एक सीता को नहीं छुड़ाया है। बाप ने समझाया है भक्ति को सीता कहा जाता है। भगवान को राम कहा जाता है। जो भक्तों को भक्ति का फल देने आते हैं। शास्त्रों में दन्त कथायें लिख दी हैं। इस बेहद के रावण राज्य में सारी दुनिया फँसी हुई है। उन्हों को लिबरेट कर राम राज्य ले जाते हैं। रघुपति राघव राम की बात नहीं। वह तो त्रेता के राजा थे। वह अब तमोप्रधान जड़-जड़ीभूत अवस्था में हैं। सीढ़ी उतरते2 नीचे आ गये हैं। पूज्य से पुजारी बन गये हैं। शिव बाबा तो कब किसकी पूजा नहीं करते होंगे। मनुष्य सब की पूजा करते हैं। देवतायें किसकी पूजा नहीं करते। वह तो हैं ही पूज्य। वह फिर जब वैश्य, शूद्र बनते हैं तो पूजा शुरू होती है। वाम मार्ग में आने से पुजारी बनते हैं। पुजारी देवताओं के चित्रों की [illegible] को नमन करते हैं। इस समय कोई एक भी पूज्य हो नहीं सकता। [illegible] भगवानुवाच फिर सतयुगी देवतायें पूज्य। इस समय तो सभी पतित भ्रष्टाचारी हैं। पुजारी बनते हैं तो पहले2 शिव की पूजा होती है। वह है अव्यभिचारी पूजा। देवताओं की पूजा को भी व्यभिचारी पूजा कहेंगे। वह सतोप्रधान फिर सतो .... फिर देवताओं से भी उतर कर पानी की, मनुष्यों को, पक्षियों आदि की पूजा करेंगे। दिन प्रति दिन तमोप्रधान अनेक पूजायें होती रहती हैं। आज कल रिलीजियस कान्फ्रेंस भी बहुत होती रहती हैं। कब आदी सनातन धर्म वालों की, कब जैनियों की, कब आर्यसमाजियों की। बहुतों को मंगाते हैं। क्योंकि हरेक अपने धर्म को तो ऊँचा समझते हैं ना। हरेक धर्म में कोई न कोई विशेष गुण होने कारण वह अपने को बड़ा समझते हैं। जैनियों में भी किस्म2 के होते हैं। 5-7 वैराईटी होंगी। उन में भी कोई नंगे आते हैं। नंगे बनने का अर्थ नहीं समझते हैं। भगवानुवाच है तुम नंगे आये थे नंगे जाना है। वह फिर कपड़े उतार नंगे बन जाते हैं। भगवानुवाच के अर्थ को नहीं समझते। बाप कहते हैं तुम आत्मायें यहाँ शरीर धारण कर पार्ट बजाने आये हो। फिर वापस जाना है। इन बातों को तुम बच्चे ही समझते हो। आत्मा ही पार्ट बजाने आती है। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। नई2 किसम के धर्म इमर्ज होते रहते हैं, इसलिए इनको वैराईटी नाटक कहा जाता है। वैराईटी धर्मों का झाड़ है। इस्लामी देखो कितने काले हैं। उन्हों की भी फिर बहुत बड़ी ब्रान्चेज निकलती हैं। मुहम्मद तो बाद में आये हैं। पहले हैं इस्लामी। मुसलमानों की बहुत है। अफ्रीका में कितने [illegible] हैं। सोने हीरों की खानें हैं। जहाँ बहुत धन देखते हैं तो उस पर चढ़ाई कर धनवान बनते हैं। क्रिश्चियन लोग भी कितने धनवान बने हैं। भारत में भी धन है परन्तु गुप्त। सोना आदि निकलते रहते हैं। खानों की पत्तियाँ छप कर आती हैं। आगे ऐसे छप कर नहीं आती थी। सोने का भाव ही था। 13 रुपये गिन्नी। अभी तो करोड़ों लोग भी धंधा करते रहते हैं। अब दिगम्बर जैनी सभा वालों की [illegible] कान्फ्रेंस है। उन्हों ने निमंत्रण दिया है। हरेक अपने को बड़ा तो समझते हैं ना। वह इतने धर्म सब कैसे होते रहते। वा कब विनाश भी होता है कुछ भी समझते नहीं। अब सब धर्मों में ऊँच तो तुम्हारा ब्राह्मण

धर्म ही है। जिसका किसको पता नहीं। कलयुगी ब्राह्मण भी बहुत है। परन्तु वह तो है कुख वंशावली।
प्रजा पिता ब्रह्मा के मुख वंशावली ब्राह्मण वह तो सब भाई-बहन होनी चाहिए। अगर वह अपन को
ब्रह्मा का औलाद कहलाते हैं तो भाई बहन ठहरे। फिर शादी भी कर न सके। सिद्ध होता है
वह ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख वंशावली नहीं हैं। सिर्फ नाम रख देते हैं। वास्तव में देवताओं से ऊँच कुल
ब्राह्मणों को कहेंगे। चोटी है ना। यह ब्राह्मण ही मनुष्य को देवता बनाते हैं। पढ़ाने वाला है परम पिता
परमात्मा स्वयं ज्ञान का सागर। यह किसको भी पता नहीं है। बाप के पास आये ब्राह्मण बन कर फिर
कुल शुद्ध बन जाते हैं। संस्कार पलटने में बड़ी मेहनत लगती है। बाप तो परमात्मा है ही। बाकि मनुष्यों
अपन को आत्मा निश्चय करना है। बाप से वर्सा लेना है। रूहानी बाप से रूहानी बच्चे ही वर्सा लेंगे। बाप
को याद करने में ही माया विघ्न डालती है। बाप कहते हैं कम कर डेडिकेट यर डे। यह है बहुत सहज।
जैसे आशुक माशुक होते हैं सिर्फ एक दो को देखते रहते हैं। विकार की बात नहीं। ऐसे नहीं कि सुहेना
देख आशुक हो है नहीं। अपनी स्त्री पर्स्ट क्लास होती है फिर भी काली से दिल लग जाती है। फिमेल का
फिमेल से, मेल का मेल से प्यार हो जाता है। एक दो को देखने बिगड़ रह नहीं सकते। बाबा तो
माशुक ही है। आशुक सब बच्चे है जो बाप को याद करते रहते हैं। एक बाप ही है जो कब [illegible]
पर आशुक नही होता। क्योंकि उन से ऊँच तो कोई है नहीं। बाकि हाँ बच्चों की महिमा करते हैं। तुम
भक्ति मार्ग से लेकर मुझ माशुक के सब आशुक हो। बुलाते भी हो कि आकर लिबरेट कर पावन
बनाओ। तुम सब हो ब्राइड्स? । मैं ब्राइडग्रुम हूं। तुम सब आसुरी जेल में फंसे हुये हो?
मैं आये छुड़ाता हूं। तो अब दिगम्बर जैन वालों का निमंत्रण आया है। तुम बच्चे ही जानते हो कि वह मूंझे
हुये है। इन में नंगे भी बहुत होते हैं। इनमें फिर कोई कपड़े वाल भी होते हैं। अनेक प्रकार के हैं।
अब कान्फ्रेन्स में फिर तो नंगे नही आवेंगे। जरूर कपड़े पहन कर ही आवेंगे। वह कहते हमारी बहुत कड़ी
बात है। कोई रह न सकते। यहाँ भी मेहनत है ना। क्रिमनल आए कितना धोखा देती है। सिविल आईज़्ड
बनने में मेहनत लगती है। अभी सब है अनसुधरेले। देवताएँ सुधरेले थे। आर्य और अनार्य कहते हैं ना।
आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले आर्य थे। वह अब अनसिविल आइज़्ड बन पड़े हैं। पहले सिवि
आइज़्ड थी। अभी वह कैरेक्टर नही है। देवताओं की कितनी अच्छी कैरेक्टर थी। अब ऐसा देवता बनाने वाला
जरूर चाहिए था। अब कान्फ्रेन्स में टापिक लिखी है" मानव जीवन में भी धर्म की आवश्यकता"। ड्रामा को
न जानने कारण मूंझे हुये हैं। तुम्हारे सिवाय कोई समझाये न सके। क्रिश्चन अथवा बौधियों आद को यह
यह थोड़े ही मालूम है क्राइस्ट बुध फिर कब आवेंगे। तुम झट हिसाब बताये सकते हो। तो समझाना चाहिए
धर्म की तो आवश्यकता है ना। पहले 2 कौन सा धर्म था फिर कौन सी धर्म आई है, अपने धर्म वाले भी
पूरा समझते नही है। योग नही लगाते। योग बिगड़ ताकत न हो आती। जौहर नहीं भरता। बाप को ही
अलमाइटी अथार्टी कहा जाता है। तुम कितना अलमाइटी बनते हो। विश्व के मालिक बन जाते हो। तुम्हारा
राज्य कोई छीन न सके। उस समय और कोई खन्ड होता नहीं। अब तो कितनी खन्ड हैं। यह सृष्टि का चक्र
कैसे फिरता है सो भी तुम जानते हो। 5000 वर्ष का यह चक्र है। बाकि सृष्टि लम्बी कितनी है। वह थोड़े ही
माप कर सकते। धरती का करके माप कर सकते हैं। सागर का तो कर न सके। आकाश का और सागर
का कोई अन्त पाये न सके। तो बाबा ने डैरेशन लिखा है वहाँ जाकर समझाओ। धर्म की आवश्यकता क्यों
नहीं है। सारा चक्र बना हो धर्मों पर है। यह है हो वैराइटी धर्मों का झाड़। यह झाड़ है अंधों के आगे
आइना है। वह लोग मगरुर रहते है ना। तुम्हारा कमाईयाँ हो। बिल्कुल नई हूँ म अब वाहर सर्विस पर
निकले हो। आहिस्ते2 तुम्हारी वृधि होती जाती है। तूफाने लगने से बहुत पत्ते गिरते भी हैं ना। और धर्मों
में तूफान लगने की बात नही रहती। उनको तो उपर से आना ही है। यहाँ तुम्हारी स्थापना बड़ी
वन्डर फुल है। पहले 2 वाले भक्त जो है उनका ही आये भगवान को फल देना है।

अपने घर ले जाने का। बुलाते भी हैं हम आत्माओं को अपने घर ले आओ। यह किसको भी पता नहीं है कि बाप स्वर्ग का भी राज भाग देते हैं। सन्यासि लोग तो सुख को मानते ही नहीं। वह चाहते हैं मोक्ष हो। मोक्ष को दर्सा नहीं कहा जाता। खुद शिव बाबा को पार्ट बजाना पड़ता है। तो फिर किसको मोक्ष में कैसे रख सकते। मनुष्य तो बिलकुल है अंधे। अंधों को रस्ता बताना तुम बच्चों का काम है। तुम ब्रह्मा-कुमारियां अपने धर्म को और सभी के धर्मों को जानते हो। तुमको तरस पड़ना चाहिए। चक्र का राज समझाना चाहिए। बोलो तुम्हारा धर्म स्थापक अपने समय पर आवेगा। समझाने वाला भी चाहिए होशियार। गीता कंठ हो क्योंकि रोला सारा है गीता के भगवान पर। गीता है संस्कृत में। संस्कृत जानने वाले डिबेट करेंगे। पहलाने 2 श्लोक में यह है। तुम कहेंगे भगवान ने कहा है मैं इन साधुओं का भी उधार करने आता हूं। वह कहेंगे भगवान आता ही नहीं है। बोलो यह है ही पतित दुनिया। यहां पावन कोई भी है नहीं। मल नामी हैं वह भी पुनर्जन्म जरूर लेते हैं। वापस जावे न सके। पुनर्जन्म लेते ही हैं। विकार से तो पावन हो कैसे सकते। हरेक को सतोप्रधान फिर सतो रजो तमो में आना ही है। अब है रावण राज्य। तो गीता को अच्छी रीत जानने वाला ही समझाये सकते हैं। तुम्हारा है सच्ची गीता। जो बाप सुनाते हैं। भगवान निराकार को ही श्री कहा जाता है। अब आत्मा निराकार बाड पत्थर को बुलाती है। वहां तुम आत्माएं रहते हो। तुमको परमात्मा थोड़े ही कहेंगे। परमात्मा तो एक ही है। जो आत्माओं के सिजरे में रहते है। ऊंच ते ऊंच भगवान। फिर सब हैं आत्माएं बच्चे। 500 करोड़ आत्माएं हैं। सर्व का सदगति करने वाला एक ही है। ऊंच ते ऊंच है ही एक भगवान। फिर हैं देवताएं। उन में भी नम्बरवन कृष्ण। क्योंकि आत्मा और शरीर दोनो पवित्र हैं। तुम हो संगम युगी। तुम्हारा यह जीवन अमुल्य गाया हुआ है। देवताओं का नहीं। मनुष्यों का अमुल्य जीवन है। कौन से मनुष्य? तुम ब्राह्मण। तुम कितने अमुल्य हो। बाप तुमको ऊंचा बनाये कितनी मेहनत करते हैं। तुम्हारे जैसे देवताएं थोड़े ही इतनी मेहनत करेंगे। वह तो बच्चों को पढ़ने लिए स्कूल में भेज देंगे। यहां तो बाप बैठ तुमको पढ़ाते हैं। यह बाप, टिचर, गुरु तीनो हैं। तो कितना रिगार्ड होना चाहिए। सर्विस एबुल बच्चों का सर्विस का बहुत शौक रहता है। बहुत कहते है हमको नौकरी छुड़ाओ। तो इस रूहानी सर्विस में लग जावेंगे। मैं कहता हूं बिगड़ पीछे छोड़ना न है। आगे चल जरूरत रहेगी क्योंकि बहुत थोड़े है। जो फिर अच्छे होशियार हैं वह सर्विस में लगे हुये हैं। हैंडस तो चाहिए ना। लड़ाई के मैदान में भी जसने लिए जिनको सिखाते हैं उनसे नौकरी आद सब छुड़ाये देते हैं। उन्हों के पास लिस्ट रहती है। फिर मलेट्री को कोई रिफ्यूज़ कर न सके। कि हम मैदान पर नहीं आवेंगे। ड्रील सिखलाते ही इसलिए है। कि जरूरत पर बुलाये लेंगे। रिफ्युज़ करने वाले को शूट भी कर लेते। या केस चलाये लेते हैं। यहां तो वह बात नहीं है। यहां फिर जो अच्छी रीत सर्विस नहीं करते गोया आपे ही अपन को शूट कर देते हैं। पद भ्रष्ट हो जाता है। अपने तकदीर को शूट कर देते हैं। अच्छी रीत पढ़े योग में रहे तो अच्छा पद भी मिले। अपन पर रहम करना होता है। अपना करके तो फिर दूसरो का करे। बाप हर प्रकार की समझानी देते रहते हैं। यह दुनिया का नाटक कैसे चलता है राजधानी कैसे स्थापन होती है और धर्म कैसे स्थापन होते है, यह धर्म भी तो राजधानी भी स्थापन होती है। इन बातों को दुनिया नहीं जानते। अब निमंत्रण तो मिलती है। 5-10 मिनट में क्या समझाये सकेंगे। एक दो घन्टा देवे तो समझाये भी सकेंगे। ड्रामा को तो बिलकुल जानते ही नहीं। बाबा ने समझाया ड्रामा के क्रियटर डाइरेक्टर मुख्य एक्टर और ड्रामा के आद मध्य अन्त को नहीं जानते तो वह एडियट हैं। यह पाइन्ट भी जहां तहां लिख देनी चाहिए। परन्तु बच्चे भूल जाते हैं। बाप क्रियटर भी है। तुम बच्चों का क्रियेट किया है। अपना बनाया है। ज्ञान भी देते हैं, शिक्षा भी देते हैं। और फिर एक्टर भी है। ज्ञान सुनाते हैं यह भी उनकी ऊंच ते ऊंच एक्ट है ना। ड्रामा के डायरेक्टर मुख्य एक्टर को न जाना है तो गोया वह जानवर हुआ ना। आप ने तो कहा है यह तमो बाध पतित हैं ना। महान मूर्ख हैं। कुछ नहीं जानते हैं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग।